Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

आधुनिक भारत

(छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ सहित)

भाग-2

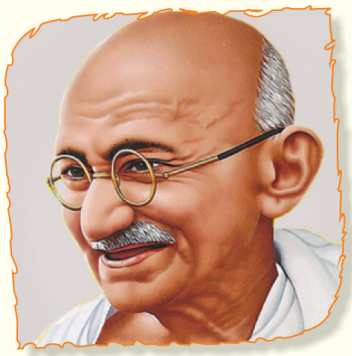

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CGPM14

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

आधुनिक भारत

(छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ सहित)

भाग–2

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

CGPCS DLP विषय सूची (Contents)

9.	**भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय चरण)**	**5-67**
9.1	गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण)	5
9.2	गांधी की विचारधारा, रणनीति, कार्यपद्धति	13
9.3	क्रांतिकारी आंदोलन का द्वितीय चरण	16
9.4	गांधीवादी आंदोलन (द्वितीय चरण)	18
9.5	भारत शासन अधिनियम, 1935	27
9.6	कॉन्ग्रेस में समाजवादी विचारधारा का उद्‌भव	29
9.7	राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता	30
9.8	देशी रियासतों में जन-आंदोलन	33
9.9	द्वितीय विश्वयुद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन	34
9.10	विभाजन के साथ स्वतंत्रता की दिशा में	39
9.11	छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता आंदोलन	45
10.	**भारत में संवैधानिक विकास**	**68-80**
11.	**भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय**	**81-93**
11.1	बंगाल के गवर्नर	81
11.2	बंगाल के गवर्नर जनरल	81
11.3	भारत के गवर्नर जनरल	84
11.4	भारत के वायसराय	85
12.	**आज़ादी के बाद का प्रारंभिक दौर**	**94-110**
12.1	देशी रियासतों का एकीकरण	94
12.2	पुर्तगाली उपनिवेशों का विलय	99
12.3	शरणार्थियों की समस्या	100
12.4	सांप्रदायिक हिंसा की समस्या	103
12.5	छत्तीसगढ़ के रियासतों का विलीनीकरण	106
12.6	छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण	107

13. राष्ट्र के गठन में विविध समस्याएँ **111-128**
13.1 भाषायी समस्या 112
13.2 राज्यों का पुनर्गठन 113
13.3 जनजातीय समुदाय की समस्याएँ 118
13.4 क्षेत्रीय असमानता के मुद्दे 121
13.5 अल्पसंख्यकों और दलितों से संबंधित समस्याएँ 123

14. विदेश नीति का नेहरू युग **129-141**
14.1 भारत की विदेश नीति और पंचशील समझौता 129
14.2 भारतीय विदेश नीति की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका 131
14.3 भारत का पड़ोसियों के साथ संबंध 133
14.4 गुटनिरपेक्ष आंदोलन 137
14.5 संयुक्त राष्ट्र संघ और भारत 138

15. 1947–64 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था **142-149**
15.1 आर्थिक विकास के प्रारंभिक विचार (स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात्) 142
15.2 स्वतंत्र भारत की औद्योगिक नीति 144
15.3 पहली तीन पंचवर्षीय योजनाएँ 145

16. भारत : चीन व पाकिस्तान से युद्ध **150-158**
16.1 भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम 150
16.2 भारत-चीन युद्ध के निष्कर्ष व परिणाम 152
16.3 भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि 154
16.4 ताशकंद समझौता 156

17. स्वतंत्र भारत में भूमि-सुधार **159-176**
17.1 ब्रिटिश भारत में भूमि अधिकार प्रणाली 159
17.2 ज़मींदारी उन्मूलन एवं काश्तकारी सुधार 163
17.3 भूदान एवं ग्रामदान आंदोलन 167
17.4 हरित क्रांति 172

अध्याय
9

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय चरण)
[Indian National Movement (Second Phase)]

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के द्वितीय चरण को गांधी युग के नाम से भी जाना जाता है। यह दौर राष्ट्रीय आंदोलन की दीर्घकालीन रणनीति और राष्ट्रीय आंदोलन के वैचारिक आयाम के प्रति प्रतिबद्ध था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषण से त्रस्त भारतीय जनता को महात्मा गांधी के तौर पर एक सशक्त नेतृत्व प्राप्त हुआ।

मोहनदास करमचंद गांधी (1869–1948 ई.) 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए। वे 1893 ई. में एक भारतीय मुस्लिम व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहाँ पर उन्होंने भारतीयों के साथ हो रहे भेदभावपूर्ण व्यवहार को देखा। एक बार जब वे दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन से यात्रा कर रहे थे तो उसी दौरान 'मेरित्सबर्ग' नामक स्टेशन पर एक अंग्रेज़ ने उन्हें धक्का देकर ट्रेन से बाहर निकाल दिया। इस घटना से गांधी जी को एक नई दिशा मिली। अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान ही गांधी जी ने भारतीयों के प्रति अपनाई जाने वाली रंगभेद की नीतियों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया।

9.1 गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण) *[Gandhian Movement (1st Phase)]*

गांधी जी ने अपने आंदोलन को संगठनात्मक रूप प्रदान करने तथा दिशा देने हेतु कई संस्थाओं, जैसे- नटाल इंडियन कॉन्ग्रेस, टॉलस्टाय फार्म (जर्मन शिल्पकार मित्र कालेन बाख की सहायता से) तथा फीनिक्स आश्रम की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका में ही गांधी जी ने 'इंडियन ओपिनियन' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन भी किया। गांधी जी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में सफलतापूर्वक आंदोलन का संचालन किये जाने के परिणामस्वरूप वहाँ की सरकार द्वारा 1914 ई. तक अधिकांश भेदभावपूर्ण काले कानूनों को रद्द कर दिया गया। यह गांधी जी की प्रथम सफलता थी जो उन्होंने अहिंसा के मार्ग द्वारा प्राप्त की।

1915 ई. में भारत आने के पश्चात् ही गांधी जी का भारतीय राजनीति में पदार्पण हुआ। गांधी जी ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु माना। गोखले जी ने गांधी जी को आदेशित किया था कि वह भारत में प्रथम वर्ष खुले कान पर मुँह बंद कर व्यतीत करें। इस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था तथा गांधी जी ने इस युद्ध में अंग्रेज़ों का समर्थन किया और भारतीयों को सेना में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित किया। इसी कारण उन्हें 'भर्ती करने वाला सार्जेंट' कहा जाने लगा। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कैसर-ए-हिंद की उपाधि से विभूषित किया। गांधी जी का मानना था कि प्रथम विश्वयुद्ध में सहयोग के बदले भारतीयों को स्वराज की प्राप्ति होगी। गांधी जी ने 1915 ई. में अहमदाबाद में साबरमती आश्रम की स्थापना की। इसका उद्देश्य रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन देना था। गांधी जी का भारतीय राजनीति में एक प्रभावशाली नेता के रूप में उदय उत्तर बिहार के चंपारण आंदोलन, गुजरात के खेड़ा कृषक आंदोलन तथा अहमदाबाद के श्रमिक विवाद का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने के पश्चात् हुआ। जहाँ चंपारण और खेड़ा आंदोलन कृषकों की समस्याओं से संबंधित थे, वहीं अहमदाबाद के श्रमिकों के विवाद की पृष्ठभूमि में कॉटन टेक्सटाइल मिल-मालिक और मज़दूरों के बीच मज़दूरी बढ़ाने तथा प्लेग बोनस दिये जाने से संबंधित विवाद था। अहमदाबाद में प्लेग की समाप्ति के पश्चात् मिल-मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे। मिल-मालिकों ने केवल 20% बोनस को स्वीकार किया और धमकी दी कि जो कर्मचारी यह बोनस नहीं स्वीकार करेगा उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। गांधी जी 35% बोनस दिये जाने की मज़दूरों की मांग का समर्थन करते हुए स्वयं हड़ताल पर बैठ गए। इस पूरे प्रकरण पर न्यायाधिकरण ने भी मज़दूरों की मांग को सही ठहराते हुए 35% बोनस दिये जाने का आदेश दिया। इन मिल-मालिकों में से एक गांधी जी के मित्र अंबालाल साराभाई भी थे, जिन्होंने साबरमती आश्रम के निर्माण हेतु बहुत अधिक मात्रा में धन दान दिया था। अंबालाल साराभाई की बहन अनुसुइया भी अहमदाबाद मज़दूर आंदोलन में गांधी जी के साथ थीं।

सत्याग्रह के आरंभिक प्रयोगों की सफलता ने गांधी जी को जनसाधारण के समीप ला खड़ा किया। गांधी जी के आदर्शों, दार्शनिक चिंतन, विचारधारा और जीवन-पद्धति ने उन्हें साधारण जनता के जीवन के साथ एकीकृत कर दिया। वे गरीब,

बिलासपुर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन करने के लिये पं. रामगोपाल तिवारी संसदीय सचिव अधिकृत किये गए थे। वे बंबई कलकत्ता मेल से 14 अगस्त, 1947 को सायंकाल बिलासपुर आए। बिलासपुर में उनके सम्मान पर 24 द्वार बनाए गए तथा 72 गोलियाँ आसमान में दागी गईं।

पं. सुदंरलाल शर्मा का जन्म 21 दिसंबर, 1881 को रायपुर जिले के चमशूर नामक छोटे से गाँव में हुआ था। वे एक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी थे जो सामाजिक न्याय, समानता एवं अहिंसा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने 1918 में धमतरी में राजनीतिक परिषद की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पं. सुंदरलाल शर्मा स्वतंत्रता आंदोलन के एक सक्रिय सदस्य थे। 1921-22 में उनकी गिरफ्तारी छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित पहली गिरफ्तारी के रूप में मानी जाती है। उन्होंने महात्मा गांधी की छत्तीसगढ़ यात्रा के दौरान बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- काकोरी कांड के मुकदमे में सरकार की तरफ से जगत नारायण मुल्ला को सरकारी वकील बनाया गया था।
- चित्तरंजन दास तथा मोतीलाल नेहरू ने 1 जनवरी, 1923 को इलाहाबाद में स्वराज पार्टी के गठन की घोषणा की थी।
- 1925 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया की नींव कानपुर में रखी गई।
- 1924 में श्रीपाद अमृत डांगे, मुज़फ्फर अहमद, नलिनी गुप्ता और शौकत उस्मानी को कानपुर बोल्शेविक षड्यंत्र के मुकदमे में चार-चार वर्षों की कैद की सज़ा हुई।
- 'इंडियन नेशनल मूवमेंट : दि लॉन्ग टर्म डाइनैमिक्स' नामक पुस्तक के लेखक विपिनचंद्र हैं।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान इलाहाबाद में पं. जवाहरलाल नेहरू ने करबंदी आंदोलन का नेतृत्व किया।
- 1937 की प्रांतीय परिषद में वित्त व राजस्व विभाग रफी अहमद किदवई को सौंपा गया।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बलिया में चित्तू पांडे के नेतृत्व में समानांतर सरकार का गठन किया गया।
- लॉर्ड कार्नवालिस की कब्र गाजीपुर में स्थित है।
- दिल्ली षड्यंत्र केस से अमीरचंद संबद्ध रहे हैं।
- बंगाल के मिदनापुर में जातिया सरकार की स्थापना 1942 में की गई।
- अगस्त 1925 में सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेंबली के अध्यक्ष विट्ठलभाई पटेल थे।
- 'सत्याग्रह' शब्द को गढ़ने वाले महात्मा गांधी थे। इन्होंने अपना पहला जनभाषण वाराणसी में दिया था।
- महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' (1909) में ब्रिटिश पार्लियामेंट को बाँझ और वेश्या कहा है।
- अमृतसर के भारतीय कॉन्ग्रेस अधिवेशन, 1919 के प्रस्ताव के अनुसार महात्मा गांधी द्वारा कॉन्ग्रेस का नया संविधान लिखने हेतु एन.सी. केलकर तथा आई.बी. सेन को सहयोग के लिये चुना गया।
- 'स्प्रीगिंग टाइगर' पुस्तक सुभाष चंद्रबोस की जीवनी है।
- 'इंडियन ओपिनियन' पत्रिका के प्रथम संपादक मनसुखलाल नज़र थे।
- दशरोजा पत्रिका राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अब्दुल गफ्फार खान ने प्रारंभ की थी।
- प्रथम अखिल भारतीय समाजवादी युवा कॉन्ग्रेस के सभापति जवाहरलाल नेहरू थे।
- गांधी जी के साप्ताहिक पत्र हरिजन का प्रथम अंक 11 फरवरी, 1933 को पूना से प्रकाशित किया गया।
- 'गोखले : माई पॉलिटिकल गुरु' पुस्तक एम.के. गांधी ने लिखा था।
- गांधीवादी विचारधारा रस्किन, थोरो एवं टॉल्स्टाय से प्रभावित रही है। गांधी के अनुसार राजनीति का तात्पर्य जनकल्याण के लिये सक्रियता होना चाहिये।
- सन् 1907 में मध्य प्रांत व बरार के कॉन्ग्रेसी नेताओं व कार्यकर्ताओं का राजनीतिक अधिवेशन रायपुर नगर में हुआ।
- गांधी जी का प्रथम छत्तीसगढ़ आगमन 20 दिसंबर, 1920 को हुआ था।

- छत्तीसगढ़ में वकालत सेवा का परित्याग असहयोग आंदोलन के दौरान हुआ। छत्तीसगढ़ में 8 वकीलों ने वकालत छोड़ दी।
- असहयोग आंदोलन के समय धमतरी तहसील के सिहावा नगरी के आदिवासियों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
- पं. सुंदरलाल शर्मा ने 1918 में छत्तीसगढ़ में अछूतोद्धार के लिये आंदोलन चलाया।
- छत्तीसगढ़ में पाँच पांडवों ने रायपुर में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की, जिनके नाम हैं- वामनराव लाखे, मौलाना अब्दुल रऊफ, लक्ष्मी महंत नारायण दास, शिवदास डागा एवं ठा. प्यारेलाल सिंह।
- गांधी जी का द्वितीय छत्तीसगढ़ आगमन 1933 ई. में हुआ।
- छत्तीसगढ़ में 27 नवंबर, 1940 को पं. रविशंकर शुक्ल ने रायपुर में व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ किया।
- छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान विद्यार्थियों ने विशाल जुलूस निकाला।
- विलासपुर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन करने के लिये पं. रामगोपाल तिवारी को संसदीय सचिव अधिकृत किया गया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में प्रकाशित समाचार-पत्र का नाम क्या था? **CGPCS (Pre) 2018**

(a) दि इंडियन ओपिनियन (b) नेशनल हेराल्ड
(c) लीडर (d) दि पॉयनियर

2. 1920 में महात्मा गांधी के साथ निम्नलिखित में से किस मुस्लिम नेता का छत्तीसगढ़ आगमन हुआ था? **CGPCS (Pre) 2018**

(a) मौलाना मुहम्मद अली (b) मौलाना शौकत अली
(c) मौलाना आज़ाद (d) मौलाना रहमत अली

3. निम्नलिखित कथन पढ़िये: **CGPCS (Pre) 2018**

1. 8 अगस्त, 1941 को व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने वाले छत्तीसगढ़ के कार्यकर्त्ताओं को ललितपुर के पास गिरफ्तार किया गया।
2. इन कार्यकर्त्ताओं में ज्वाला प्रसाद मिश्र एवं यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव सम्मिलित थे।
3. पं. रविशंकर शुक्ल ने इन कार्यकर्त्ताओं का नेतृत्व किया था।

सही उत्तर चुनिये:

(a) 1, 2 एवं 3 सही हैं। (b) 1 एवं 2 सही हैं।
(c) 2 एवं 3 सही हैं। (d) 1 एवं 3 सही हैं।

4. 'दशरोजा' पत्रिका राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान किसने प्रारंभ की थी? **CGPCS (Pre) 2017**

(a) मुहम्मद अली जिन्ना (b) अब्दुल गफ्फार खान
(c) लाला लाजपत राय (d) बाल गंगाधर तिलक

5. वर्ष 1945 की प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित थीं: **CGPCS (Pre) 2017**

1. वेवेल योजना
2. शिमला सम्मेलन
3. नौसेना विद्रोह
4. आजाद हिंद फौज मुकदमा

सही उत्तर चुनिये:

(a) 1, 2, 3 (b) 2, 3, 4
(c) 1, 2, 4 (d) 1, 3, 4
(e) 1, 2, 3, 4

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करिये: **CGPCS (Pre) 2017**

सूची-I (व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने वाले)	**सूची-II (स्थान)**
A. आचार्य विनोबा भावे	1. पवनार
B. यतियतनलाल जैन	2. दुर्ग
C. रामगोपाल तिवारी	3. रायपुर
D. रत्नाकर झा	4. बिलासपुर

कोड:

	A	B	C	D
(a)	1	3	4	2
(b)	1	2	3	4
(c)	1	4	3	2
(d)	1	3	2	4
(e)	1	4	2	3

7. रत्नाकर झा किस स्थान के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे? **CGPCS (Pre) 2017**
(a) रायपुर (b) राजनांदगाँव
(c) बिलासपुर (d) रायगढ़
(e) इनमें से कोई नहीं

8. फरवरी 1928 में आयोजित सर्वदलीय सम्मेलन के अध्यक्ष निम्नलिखित में से कौन थे? **CGPCS (Pre) 2016**
(a) मोतीलाल नेहरू (b) डॉ. एम.ए. अंसारी
(c) सुभाषचंद्र बोस (d) एम.के. गांधी
(e) इनमें से कोई नहीं

9. निम्नलिखित कथन पढ़िये: **CGPCS (Pre) 2016**
1. 9 अगस्त, 1942 को रायपुर में कॉन्ग्रेसजनों ने जुलूस निकाला जिसमें 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारे लगाए गए।
2. रायपुर के एक युवक रामकृष्ण सिंह ठाकुर ने नागपुर के हाईकोर्ट भवन पर तिरंगा लहराया।
3. बिलासपुर में विद्यार्थियों ने 9 अगस्त, 1942 को हड़ताल की।

सही उत्तर चुनिये:
(a) 1, 2 एवं 3 सही हैं। (b) 1 एवं 2 सही हैं।
(c) 2 एवं 3 सही हैं। (d) 1 एवं 3 सही हैं।
(e) केवल 1 सही है।

10. निम्नलिखित कथन पढ़िये: **CGPCS (Pre) 2016**
1. 29 जुलाई, 1938 को छत्तीसगढ़ के पं. रविशंकर शुक्ल ने मध्य प्रांत के द्वितीय कॉन्ग्रेस मंत्रिमंडल का गठन किया।
2. इस मंत्रिमंडल ने प्रांत में 'विद्या मंदिर' योजना प्रारंभ की।
3. 8 नवंबर, 1939 को इस मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया।

सही उत्तर चुनिये:
(a) 1, 2 एवं 3 सही हैं। (b) 1 एवं 2 सही हैं।
(c) 2 एवं 3 सही हैं। (d) 1 एवं 3 सही हैं।
(e) केवल 1 सही है।

11. निम्नलिखित में से कौन-सी जोड़ी (घटना एवं व्यक्ति) सुमेलित नहीं है? **CGPCS (Pre) 2016**
(a) समादा में राजनीतिक सम्मेलन, 7-8 दिसंबर, 1946 — 1. डॉ. खूबचंद बघेल
(b) बिलासपुर में विद्यार्थी सप्ताह, 13-15 दिसंबर, 1946 — 2. भुवन भास्कर सिंह
(c) तहसील राजनीतिक सम्मेलन, बेमेतरा, 31 दिसंबर, 1946 — 3. मोहन लाल बाकलीवाल
(d) रायपुर के गाँधी चौक में तिरंगा फहराना, 15 अगस्त, 1947 — 4. पं. रविशंकर शुक्ल
(e) बिलासपुर में तिरंगा फहराना, 15 अगस्त, 1947 — 5. रामगोपाल तिवारी

12. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करिये: **CGPCS (Pre) 2015**

सूची-I (भारत छोड़ो में छ.ग. की घटनाएँ)	सूची-II (संबंधित व्यक्ति)
A. रायपुर षड्यंत्र केस	1. ईश्वरी चरण शुक्ला
B. रायपुर डाइनामाइट केस	2. रघुनंदन सिंगरौल
C. दुर्ग जिला कचहरी में आगजनी	3. रणवीर सिंह शास्त्री
D. रायपुर में विद्यार्थियों का जुलूस	4. परसराम सोनी

कोड:

	A	B	C	D
(a)	4	3	1	2
(b)	4	2	3	1
(c)	4	1	3	2
(d)	4	1	2	3
(e)	4	2	1	3

13. भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव बंबई के किस मैदान में पारित किया गया? **CGPCS (Pre) 2015**
(a) मैरीन ड्राइव मैदान (b) काला घोड़ा मैदान
(c) चैंबूर मैदान (d) ग्वालिया टैंक
(e) इनमें से कोई नहीं

14. निम्नलिखित में से किसने 1920 में बी.एन.सी. मिल राजनांदगाँव के श्रमिकों की ऐतिहासिक हड़ताल का नेतृत्व किया? **CGPCS (Pre) 2014**
(a) पं. सुंदरलाल शर्मा (b) ठाकुर प्यारेलाल सिंह
(c) क्रांतिकुमार भारतीय (d) बैरिस्टर छेदीलाल
(e) कुतुबुद्दीन

15. असहयोग आंदोलन में दुर्ग के इन वकीलों ने वकालत का परित्याग किया: **CGPCS (Pre) 2013**

1. राम दयाल तिवारी 2. घनश्याम सिंह गुप्त
3. प्यारेलाल सिंह 4. रत्नाकर झा

सही उत्तर चुनिये:

(a) 1, 2 एवं 3 (b) 2, 3 एवं 4
(c) 1 एवं 2 (d) 2 एवं 4
(e) केवल 4

16. निम्न जोड़ियों को सुमेलित करें (गांधी जी के संबंध में): **CGPCS (Pre) 2013**

A. गांधी जी को येरवदा जेल ले जाया गया — 1. दिल्ली के समझौते का अनुमोदन किया
B. गांधी जी ने आमरण किया — 2. सविनय अवज्ञा आंदोलन
C. कराची जाते समय काले झंडे दिखाए गए — 3. 1939 का कॉन्ग्रेस संकट
D. उन्होंने कहा कि यह पराजय मेरी उनसे अधिक है — 4. सांप्रदायिक अवॉर्ड के विरुद्ध

कूट:

	A	B	C	D
(a)	2	4	1	3
(b)	1	2	3	4
(c)	1	4	2	3
(d)	2	4	3	1
(e)	3	4	1	2

17. गांधी जी का सर्वप्रथम रायपुर आगमन किस तिथि को हुआ? **CGPCS (Pre) 2012**

(a) 18 दिसंबर, 1920 (b) 19 दिसंबर, 1920
(c) 20 दिसंबर, 1920 (d) 21 दिसंबर, 1920
(e) 22 दिसंबर, 1920

18. निम्न कथनों को पढ़िये: **CGPCS (Pre) 2012**

1. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान छत्तीसगढ़ में जंगल सत्याग्रह हुए।
2. छत्तीसगढ़ में सविनय अवज्ञा आंदोलन शांतिपूर्ण रहा।
3. नवगाँव-रुद्री जंगल सत्याग्रह में पुलिस ने गोली चालन किया।

सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 सही है।
(b) केवल 2 सही है।
(c) 1 एवं 2 सही हैं।
(d) 1, 2 एवं 3 सही हैं।
(e) 1 एवं 3 सही हैं।

19. सही मिलान कीजिये:

A. मार्ले-मिंटो सुधार — 1. देशव्यापी आंदोलन
B. साइमन कमीशन वापसी — 2. असहयोग आंदोलन
C. चौरी-चौरा घटना — 3. सांप्रदायिक निर्वाचन
D. दांडी मार्च — 4. नमक कानून का विरोध

CGPCS (Pre) 2012

कूट:

	A	B	C	D
(a)	3	4	1	2
(b)	3	1	2	4
(c)	2	3	4	1
(d)	4	1	2	3
(e)	2	1	4	3

20. 'ऑपरेशन रूबिकॉन' वह कूट शब्द था जिसे भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा निम्नलिखित में से किस संदर्भ में प्रयोग लाया जाना था?

(a) जेल में गांधी का आमरण अनशन
(b) जयप्रकाश नारायण की गतिविधियाँ
(c) गोलमेज़ सम्मेलन में गांधी की सहभागिता
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (b)	4. (b)	5. (c)	6. (a)	7. (e)	8. (b)	9. (b)	10. (d)
11. (d)	12. (d)	13. (d)	14. (b)	15. (b)	16. (a)	17. (c)	18. (e)	19. (b)	20. (a)

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिये)

1. असहयोग आंदोलन के दौरान छत्तीसगढ़ के किन नेताओं ने अपनी उपाधियों का त्याग किया? **CGPCS (Mains) 2018**
2. 1942 में रायपुर में हुए डाइनामाइट कांड की संक्षिप्त जानकारी दीजिये। **CGPCS (Mains) 2018**
3. 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन क्यों शुरू किया गया? **CGPCS (Mains) 2017**
4. मेरठ षड्यंत्र केस क्या था? **CGPCS (Mains) 2017**
5. क्रिप्स मिशन के मुख्य प्रस्ताव (कोई चार) **CGPCS (Mains) 2017**
6. भारत सरकार अधिनियम, 1935 का क्या महत्त्व है? **CGPCS (Mains) 2015**
7. महात्मा गांधी ने डांडी यात्रा क्यों की थी? **CGPCS (Mains) 2013**
8. गांधी जी छत्तीसगढ़ में दूसरी बार कब और किस कारण पधारे थे? **CGPCS (Mains) 2013**

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिये)

1. भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस द्वारा भारत विभाजन को स्वीकार करने के चार कारण लिखिये। **CGPCS (Mains) 2018**
2. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान दुर्ग में हुई क्रांतिकारी घटनाओं का विवरण दीजिये। **CGPCS (Mains) 2018**
3. मुस्लिम लीग एवं कॉन्ग्रेस की 16 मई, 1946 की कैबिनेट मिशन योजना पर क्या प्रतिक्रियाएँ थीं? **CGPCS (Mains) 2017**
4. सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने के पूर्व महात्मा गांधी ने वाइसराय लॉर्ड डरबिन के समक्ष कौन-सी 11 मांगें रखीं? **CGPCS (Mains) 2015**
5. महात्मा गांधी द्वारा दूसरी बार छत्तीसगढ़ प्रवास का विवरण दीजिये। **CGPCS (Mains) 2015**
6. नेहरू रिपोर्ट भारतीय राजनीतिक इतिहास में राष्ट्रवादियों का प्रामाणिक दस्तावेज़ है। स्पष्ट कीजिये। **CGPCS (Mains) 2015**
7. चंपारण आंदोलन में महात्मा गांधी की क्या भूमिका थी? **CGPCS (Mains) 2014**
8. असहयोग आंदोलन क्यों प्रारंभ किया गया? **CGPCS (Mains) 2013**
9. 1942 का रायपुर षड्यंत्र केस क्या था? **CGPCS (Mains) 2012**
10. कैबिनेट मिशन योजना पर टिप्पणी कीजिये।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/125/175 शब्दों में दीजिये)

1. छत्तीसगढ़ की राष्ट्रीय चेतना के विकास में पं. सुंदरलाल शर्मा की भूमिका को रेखांकित कीजिये। **(100 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2018**
2. छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ो आंदोलन में युवाओं की भूमिका का विश्लेषण कीजिये। **(175 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2018**
3. स्वाधीनता आंदोलन में छत्तीसगढ़ पर गांधीवाद के प्रभावों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। **(250 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2017**
4. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान रायपुर में हुए विद्यार्थी आंदोलन पर प्रकाश डालिये। **(100 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2016**
5. व्यक्तिगत सत्याग्रह में छत्तीसगढ़ के योगदान को रेखांकित कीजिये। **(250 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2016**
6. अन्य ऐतिहासिक तत्त्वों तथा शक्तियों का वर्णन कीजिये, जिन्होंने अंग्रेज़ों को 1947 में भारत विभाजित करके छोड़ने के लिये बाध्य किया। **(500 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2016**

7. निम्नलिखित का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान रेखांकित कीजिये:
   i. नेताजी सुभाषचंद्र बोस का व्यक्तित्व
   ii. आजाद हिंद फौज का योगदान
   iii. आजाद हिंद फौज के सेनाधिकारियों पर मुकदमा और उसके परिणाम **(500 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2014**
8. भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि की विवेचना कीजिये। **(250 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2013**
9. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारत छोड़ो आंदोलन के महत्त्व की विवेचना कीजिये। **(250 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2012**
10. छत्तीसगढ़ में स्वराज पार्टी के प्रभावों का विश्लेषण कीजिये। **(250 शब्द)** **CGPCS (Mains) 2012**

नोट: वर्ष 2018 से पूर्व परीक्षा प्रणाली में दीर्घउत्तरीय प्रश्नों के अंतर्गत 100/250/500 शब्द सीमा वाले प्रश्न पूछे जाते थे, जबकि नवीन परीक्षा प्रणाली के अंतर्गत 100/125/175 शब्दों के प्रश्न पूछे जाते हैं।

अध्याय
10

भारत में संवैधानिक विकास (Constitutional Development in India)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारत के संवैधानिक विकास की यात्रा सन् 1599 से आरंभ होती है, जब महारानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इंडिया कंपनी को एक राजलेख द्वारा पंद्रह वर्षों के लिये व्यापार का अधिकार प्रदान किया, जिसे '1599 ई. का चार्टर' कहा जाता है। इस चार्टर के माध्यम से कंपनी को पूर्वी देशों में व्यापार का अधिकार सौंपा गया तथा कंपनी की समस्त शक्तियाँ 24 सदस्यीय परिषद में निहित कर दी गईं। '1726 ई. के चार्टर' से कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास प्रेसिडेंसी के गवर्नरों को विधि-निर्माण की शक्ति सौंपी गई।

रेग्युलेटिंग एक्ट, 1773 *(Regulating Act, 1773)*

भारत के संवैधानिक इतिहास में सन् 1773 का रेग्युलेटिंग एक्ट विशेष महत्त्व रखता है। यह अधिनियम भारत में कंपनी के प्रशासन पर ब्रिटिश संसदीय नियंत्रणों के प्रयासों की शुरुआत थी। परिणामतः अब कंपनी के शासनाधीन क्षेत्रों का प्रशासन कंपनी के व्यापारियों का निजी मामला नहीं रहा। इस एक्ट में भारत में कंपनी के शासन के लिये पहली बार लिखित संविधान प्रस्तुत किया गया। इस एक्ट में उल्लिखित प्रावधान निम्नवत् थे-

- इस एक्ट के द्वारा कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई। इसमें एक मुख्य न्यायाधीश तथा तीन अवर न्यायाधीश होते थे। सर एलिजाह इम्पे मुख्य न्यायाधीश तथा चेंबर्स, लिमेस्टर एवं हाइड अन्य न्यायाधीश नियुक्त किये गए। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध अपील लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल में की जा सकती थी। इस सर्वोच्च न्यायालय को प्राथमिक तथा पुनर्विचार संबंधी अधिकार दिये गए। यह न्यायालय सन् 1774 में गठित किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर को 'बंगाल का गवर्नर जनरल' पद नाम दे दिया गया। साथ ही उसे कुछ विशेष मामलों में मद्रास तथा बंबई की प्रेसिडेंसियों का अधीक्षण भी करना था। बंगाल में एक प्रशासक मंडल बनाया गया, जिसमें गवर्नर जनरल (अध्यक्ष) तथा चार सदस्य जिन्हें पार्षद कहा जाता था, को नियुक्त किया गया। इस प्रशासक मंडल में निर्णय बहुमत से होते थे। केवल मत बराबर होने की स्थिति में ही गवर्नर जनरल निर्णायक मत का प्रयोग कर सकता था।
- प्रशासक मंडल के सदस्यों का निर्वाचन पाँच वर्षों के लिये किया जाता था तथा वे कंपनी के निदेशक मंडल (Board of Directors) की सिफारिश पर ब्रिटिश क्राउन द्वारा ही हटाए जा सकते थे।
- इस अधिनियम के अनुसार कर्मचारी किसी भी प्रकार का उपहार, दान या पारितोषिक ग्रहण नहीं कर सकते थे।

इस प्रकार रेग्युलेटिंग एक्ट के माध्यम से एक ईमानदार शासन का आधारभूत सिद्धांत निर्धारित किया गया तथा इस नियामक अधिनियम के द्वारा ब्रिटिश भारत के लिये एक लिखित संविधान प्रणाली का सूत्रपात हुआ। वास्तव में इस अधिनियम के माध्यम से एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के स्थान पर एक संस्था के शासन की स्थापना हो गई।

पिट्स इंडिया एक्ट, 1784 *(Pitt's India Act, 1784)*

कंपनी पर अपने प्रभाव को मज़बूत करने के उद्देश्य से ब्रिटिश पार्लियामेंट ने सन् 1784 में पिट्स इंडिया एक्ट पारित किया। इसके माध्यम से छः सदस्यीय नियंत्रण बोर्ड (Board of Control) की व्यवस्था की गई। इस नियंत्रण बोर्ड को भारतीय प्रशासन के संबंध में निरीक्षण, निर्देशन तथा नियंत्रण संबंधी व्यापक अधिकार दिये गए, हालाँकि कंपनी के व्यापार को अछूता छोड़ दिया गया। इस एक्ट के प्रमुख प्रावधान इस प्रकार थे-

- भारत का प्रशासन गवर्नर जनरल व उसकी तीन-सदस्यीय परिषद के हाथ में रहेगा। परिषद सहित गवर्नर जनरल को इस बात का अधिकार होगा कि वह अन्य प्रेसिडेंसियों के कार्यों का निरीक्षण, नियंत्रण तथा निर्देशन कर सके। गवर्नर जनरल को अभी भी बहुमत के आधार पर कार्य करना होता था। पिट्स अधिनियम के द्वारा प्रांतीय गवर्नरों की कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या चार से घटाकर तीन कर दी गई। इनमें से एक सदस्य स्थानीय मुख्य सेनापति होता था। इस अधिनियम

अध्याय
11

भारत के गवर्नर जनरल तथा वायसराय (Governor General and Viceroy of India)

11.1 बंगाल के गवर्नर *(Governor of Bengal)*

रॉबर्ट क्लाइव (1757-60 और 1765-67)

- 1757 का प्लासी का युद्ध
- बंगाल के समस्त क्षेत्र के लिये उप-दीवान नियुक्त किये गए: बंगाल के लिये मुहम्मद रज़ा खाँ, बिहार के लिये राजा शिताबराय तथा उड़ीसा के लिये राय दुर्लभ की नियुक्ति की।
- बंगाल में द्वैध शासन का जनक, श्वेत विद्रोह
- 1765 में इलाहाबाद की संधियाँ (अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय के साथ)
- सलाबत जंग तथा आलमगीर-II द्वारा 'उमरा' की उपाधि दी गई।
- क्लाइव ने सेना के तीन केंद्रों की स्थापना की- इलाहाबाद, मुंगेर व बांकीपुर (पश्चिम बंगाल)
- क्लाइव के पश्चात् कुछ समय तक हॉलवैल बंगाल का गवर्नर रहा।

वेंसिटार्ट (1760-64)

- बक्सर का युद्ध (1764)
- 1767–69 तक वेरेल्स्ट ने बंगाल के गवर्नर का पदभार सँभाला।

कर्टियर (1769-72)

- बंगाल में अकाल (1770)

वॉरेन हेस्टिंग्स (1772-74)

- बंगाल का अंतिम गवर्नर, बंगाल में द्वैध शासन को समाप्त किया।
- 1772 में प्रत्येक ज़िले में एक फौजदारी तथा दीवानी अदालतों की स्थापना।

11.2 बंगाल के गवर्नर जनरल *(Governor General of Bengal)*

वॉरेन हेस्टिंग्स (1774-85)

- रेग्युलेटिंग एक्ट (1773) के तहत वॉरेन हेस्टिंग्स को बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल बनाया गया।
- 1781 का अधिनियम- इसके तहत गवर्नर जनरल तथा उसकी काउंसिल एवं कलकत्ता उच्च न्यायालय के मध्य शक्तियों का कार्यक्षेत्र स्पष्ट रूप से विभाजित कर दिया गया।
- नंद कुमार पर अभियोग लगाकर फाँसी; इस मुकदमे को 'न्यायिक हत्या' की संज्ञा दी जाती है।
- 1781 में मुस्लिम शिक्षा सुधार के लिये कलकत्ता में प्रथम मदरसा स्थापित।
- 1775–82 का प्रथम मराठा युद्ध तथा 1782 में सालबाई की संधि।
- 1780–84 का द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध व मंगलौर की संधि।

अध्याय
12

आज़ादी के बाद का प्रारंभिक दौर (Initial Phase After Independence)

15 अगस्त, 1947 को भारत को आज़ादी मिली। स्वतंत्रता दिवस का औपचारिक समारोह एक राष्ट्र के पुनर्निर्माण के संकल्प के साथ शुरू हुआ। इसमें चौधरी खलिकुज्ज़मा ने जहाँ हिंदू-मुस्लिम एकता की बात कही, वहीं सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने पूर्व-पश्चिम संश्लेषण के आधार पर राष्ट्र निर्माण की बात कही। फिर आज़ाद देश के भावी प्रधानमंत्री नेहरू ने संविधान सभा तथा राष्ट्र को संबोधित करते हुए 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' (Tryst with destiny) नामक अपने अविस्मरणीय भाषण में भारतीय जनता की भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा- "मध्य रात्रि की इस बेला में जब पूरी दुनिया नींद के आगोश में सो रही है, हिंदुस्तान एक नई ज़िंदगी और आज़ादी के वातावरण में अपनी आँखें खोल रहा है। यह एक ऐसा क्षण है, जो इतिहास में बहुत ही कम प्रकट होता है, जब हम पुराने युग से एक नए युग में प्रवेश करते हैं, जब एक युग खत्म होता है और जब एक देश की बहुत दिनों से रखी हुई आत्मा अचानक अपनी अभिव्यक्ति पा लेती है।"

जब स्वतंत्र भारत ने अपने नव-निर्माण का कार्य प्रारंभ किया तो उसके पास सिर्फ समस्याएँ ही नहीं, कई अनमोल रत्न भी थे। उनमें सबसे बड़ी संपदा थी- उच्च क्षमता व आदर्श वाले समर्पित महान नेताओं की एक लंबी कतार। नेहरू के साथ नेताओं का एक विशाल समूह खड़ा था, जिन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में यादगार भूमिका निभाई थी। सरदार पटेल दृढ़ इच्छाशक्ति के स्वामी तथा प्रशासनिक कार्यों में निपुण थे। इसके अलावा विद्वान अबुल कलाम आज़ाद, विद्वता तथा पांडित्य से भरपूर राजेंद्र प्रसाद और तीक्ष्ण बुद्धि संपन्न सी. राजगोपालाचारी तथा राज्य स्तर पर भी कई महत्त्वपूर्ण नेता थे- जैसे यू. पी. में गोविंद वल्लभ पंत, पश्चिम बंगाल में बी.सी. राय, बंबई में बी.जी. खेर तथा मोरारजी देसाई। ये सभी अपने-अपने प्रदेशों के निर्विवाद, प्रख्यात राजनीतिक शक्ति तथा जन नेता की छवि वाले लोग थे। इन सभी नेताओं को आधुनिक तथा लोकवादी प्रशासन चलाने के लिये पर्याप्त कुशलता प्राप्त थी।

आज़ाद भारत का प्रथम मंत्रिमंडल न केवल एक समावेशी भारत का प्रतिनिधित्व करता था, बल्कि यह असहमतियों के प्रति परस्पर सहमति के जज़्बे का भी द्योतक था। यह भारत में शुरुआती स्तर से ही लोकतंत्र की मज़बूती की कहानी प्रस्तुत करता रहा है। इस मंत्रिमंडल में दो लोगों का संबंध उद्योग जगत से था तो एक व्यक्ति सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व करता था। स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रिमंडल उस काल के संदर्भ में राजनीतिक चरित्र का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का था। इसमें पूरे देश का प्रतिनिधित्व था। इसमें शामिल होने वाले मंत्री पाँच अलग-अलग धर्मों से संबंध रखने वाले लोग थे। देश के सभी हिस्सों की भागीदारी थी, इसमें एक महिला (स्वास्थ्य मंत्री) राजकुमारी अमृत कौर भी थीं तथा दो पिछड़े माने जाने वाले समुदाय के नेता भी शामिल थे।

12.1 देशी रियासतों का एकीकरण *(Integration of Princely States)*

देसी रियासतों की संख्या कितनी थी, इस बात पर भी विवाद था, लेकिन इतनी तो पक्की बात है कि रियासतों की कुल संख्या 500 से अधिक थी तथा इनके आकार, हैसियत एवं रियासती संरचना भी अलग-अलग प्रकार की थी। जहाँ एक तरफ कश्मीर व हैदराबाद जैसी बड़ी देसी रियासतें थीं, जो किसी यूरोपियन देश के बराबर थीं तो वहीं दूसरी तरफ इतनी छोटी रियासतें भी थीं, जिनके तहत दर्जन अथवा दो दर्जन गाँव आते थे।

देसी रियासतें भारतीय इतिहास की लंबी राजनीतिक प्रक्रियाओं और ब्रिटिश नीतियों का परिणाम थीं। ये रजवाड़े अपनी ताकत और अपने स्वरूप के लिये पूरी तरह से अंग्रेज़ों पर निर्भर थे। भारत में कंपनी का शासन स्थापित होने के बाद देसी राज्यों को एक संधि करने पर मजबूर किया गया, जिसके तहत ब्रिटेन को 'सर्वोच्च शक्ति' के रूप में स्वीकार किया गया। इस संधि के माध्यम से ब्रिटिश राज्य ने मंत्रियों और उत्तराधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार अपने हाथ में रखा था तथा उन्हें सैनिक सहायता उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दे रखा था।

इन देसी रियासतों में काठियावाड़ और दक्षिण में स्थित कुछ जागीरों को छोड़कर किसी भी देसी रियासत के पास समुद्र तट नहीं था। आर्थिक तथा राजनीतिक कारणों से भी इन रियासतों की निर्भरता अंग्रेज़ों पर और ज़्यादा थी, इसका कारण यह

अध्याय
13

राष्ट्र के गठन में विविध समस्याएँ
(Various Difficulties in the Formation of the Nation)

स्वतंत्रता के बाद से ही देश को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उनमें राष्ट्रीय एकता को बनाकर रखना तथा राष्ट्र को मज़बूती प्रदान करना प्रमुख चुनौतियाँ थीं। भारतीय राष्ट्र का बनना अचानक घटित होने वाली घटना न होकर एक ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम थी। भारतीय सभ्यता में विविधता के लक्षण को हम प्राचीन काल से ही देख सकते हैं। जैसा कि कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने भी माना है कि "भारत की एकता भावनाओं की एकता है।" मुगलों के शासन के दौरान ही भारतीयों में राजनीतिक, प्रशासनिक व आर्थिक एकीकरण के तत्त्व पूरी तरह से विकसित हो गए थे। उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने भारत के एकीकरण की प्रक्रिया को और सुदृढ़ बना दिया।

स्वतंत्रता के दौरान होने वाले राष्ट्रीय आंदोलन ने भारतीयों को राजनीतिक व भावनात्मक रूप से जोड़कर उन्हें एक राष्ट्र का स्वरूप दे दिया लेकिन अभी भी भारत पूरी तरह से राष्ट्र नहीं कहा जा सकता था, बल्कि यह राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में था। भारतीय राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया दीर्घकालीन व सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया थी। राष्ट्रीय आंदोलन के नेतागण, जो विभिन्न क्षेत्र, भाषा व धर्म से संबद्ध थे, भी जब इस नए गणतंत्र की बुनियाद रख रहे थे तो उन्होंने भारत के एकीकरण और राष्ट्रीय एकता की प्रक्रिया को न सिर्फ बनाए रखना चाहा बल्कि उसे भविष्य में और ज़्यादा विकसित करने के बारे में सोचा। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं के वक्तव्यों से यह बात पूरी तरह स्पष्ट होती है कि "भारत की एकता का पालन-पोषण मेरा पेशा है।" वस्तुतः भारत दुनिया का सबसे अधिक व जटिल सांस्कृतिक विभिन्नताओं वाला देश है। भिन्न-भिन्न भाषायी समूह, विभिन्न सांस्कृतिक और भौगोलिक-आर्थिक क्षेत्र, कई धर्मों व पंथों के लोगों का साथ में निवास करना भारत-भूमि की विशिष्टता को दर्शाता है। तमाम तरह की विविधताओं के उपस्थित होने के बाद भी इसकी विविधता, इसकी एकता के मार्ग में कभी बाधा नहीं बनी। अतः राष्ट्र निर्माताओं ने भी इस राष्ट्र का निर्माण वृहद् आधार पर करना ही उचित समझा।

राष्ट्र निर्माताओं ने भारत की विविधता को एक समस्या के रूप में न देखते हुए बल्कि सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ इसे एक शक्ति का स्रोत माना। इस प्रकार स्वतंत्र भारत का निर्माण 'विविधता में एकता' की अवधारणा के साथ हुआ। यहाँ विखंडनकारी प्रवृत्तियाँ भी पर्याप्त रूप में विद्यमान थीं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्र का निर्माण एक वृहद् रणनीति के तहत किया गया था। इसमें क्षेत्रीय समानता, राजनीतिक व संस्थागत संसाधनों का कुशल संचालन, सर्वानुकूल सामाजिक ढाँचे का विकास, सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ, समस्त प्रकार की असमानताओं का उन्मूलन और समाज के हर वर्ग को समान अवसर उपलब्ध कराना शामिल था। भारतीय संविधान का मौलिक ढाँचा भी इस प्रकार का था कि विघटनकारी प्रवृत्तियों का दमन किया जा सके। भारतीय संसद ने भी इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। भारतीय संसद एक ऐसा मंच था जहाँ सभी तरह की राजनीतिक शक्तियाँ अपने विचार देश के सम्मुख रख सकें।

आज़ादी के बाद नियोजित आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये सरकार द्वारा गठित योजना आयोग का स्वरूप भी अखिल भारतीय स्तर का था। आयोग ने क्षेत्रीय आर्थिक विषमताओं को दूर करने में तथा राज्यों के बीच आर्थिक संसाधनों का वितरण भी बड़े ही निष्पक्ष ढंग से किया था। भारतीय संविधान में भी समस्त नागरिकों को धर्म, जाति व लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त कर, समाज के हर वर्ग को पूरी समानता देने की बात कही गई। आरक्षण तथा सकारात्मक भेदभाव के माध्यम से भारतीय संविधान ने वंचित वर्गों के हितों को पुष्ट करने का प्रयास किया। सामाजिक न्याय व समरसता को बढ़ावा देने के लिये ज़मींदारी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया। समस्त प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ, यथा- बेगार, बंधुआ मज़दूरी आदि को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया ताकि राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो।

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय एकता को मज़बूती प्रदान करने का काम किया गया। लेकिन विखंडनकारी तत्त्व भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद थे। इन तत्त्वों ने बहुत जल्दी ही सिर उठाना शुरू कर दिया था तथा राष्ट्रीय एकता तार-तार होने लगी थी। स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्षों में सबसे बड़ा विभाजनकारी मुद्दा भाषा की समस्या थी। इस समस्या की वजह से देश की राजनीतिक व सांस्कृतिक एकता खतरे में पड़ती हुई दिखाई दे रही थी। भाषायी समस्या राष्ट्र के शैक्षणिक व आर्थिक विकास, रोज़गार व अन्य आर्थिक अवसर तथा राजनीतिक सत्ता तक पहुँच बनाने जैसे तरह-तरह के सवालों से भी जुड़ा मुद्दा था।

अध्याय
14

विदेश नीति का नेहरू युग
(Nehru Era of Foreign Policy)

भारत की विदेश नीति के मूलभूत तत्त्व राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ही निर्मित होने शुरू हो गए थे, जब राष्ट्रीय नेतृत्व ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी विचारधारा के अनुसार नीतियाँ बनानी शुरू कर दी थीं। एक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने का प्रयत्न आज़ादी के बाद की भारतीय राजनीति की विशेषता थी। भारतीय विदेश नीति लंबे इतिहास और तात्कालिक घटनाओं की परिणति थी। विश्व परिस्थितियों में क्रांतिकारी परिवर्तनों के बावजूद आज़ादी के संघर्ष और आज़ादी के आरंभिक वर्षों में विकसित विशेषताओं की निरंतरता बाद के वर्षों में भी बनी रही। भारतीय विदेश नीति के मुख्य शिल्पकार पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। स्वतंत्रता के बाद से मृत्युपर्यंत तक भारतीय विदेश नीति इनके वृहद् मानवतावादी व्यक्तित्व तथा सिद्धांतों के आस-पास ही घूमती रही। अपनी विदेश नीति के तहत भारत सिर्फ निष्पक्ष या सैनिक गुटों से दूर ही नहीं रहा बल्कि इसने अपनी आवश्यकतानुसार तत्कालीन महाशक्तियों का उपयोग भी देशहित में किया। भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत का अर्थ था– हर मुद्दे पर आज़ादी से रुख अपनाना, सही या गलत की स्वयं पहचान करना।

14.1 भारत की विदेश नीति और पंचशील समझौता
(India's Foreign Policy and Panchsheel Agreement)

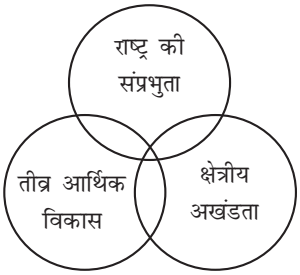

प्रारंभिक विदेश नीति

भारत सन् 1947 में स्वाधीन हुआ और इसके सामने दुनिया में अपनी छवि विकसित करने और उस काल की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने जैसी चुनौतियाँ थीं। भारत की विदेश नीति पर स्वाधीन भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की गहरी छाप थी। उन्होंने इसको पाला-पोसा था, जीवन और शक्ति प्रदान की थी और अनेकानेक उपायों से इसे आकार दिया था, लेकिन उन्होंने इसे गढ़ा नहीं था। नेहरू ने खुद ही स्वीकार किया था कि भारत की विदेश नीति की जड़ें भारत की सभ्यता और परंपराओं में, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, इसकी भौगोलिक स्थिति में और शांति-सुरक्षा, विकास तथा इस जगत् में एक स्थान के लिये भारत की तलाश में स्थित थीं। उन्हीं के शब्दों में, "हमारी नीति को 'नेहरू नीति' कहना बिल्कुल गलत है...इसे मैंने जन्म नहीं दिया। यह नीति भारत की परिस्थिति में, भारत के अतीत की सोच में, भारत के संपूर्ण दृष्टिकोण में निहित है, यह निहित है भारतीय मानस के उस अनुकूलन में जो स्वाधीनता संग्राम के दौरान हुआ था और यह आज की दुनिया के हालात में निहित है।" नेहरू पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता था कि विदेश नीति के मामले में वह आदर्शवादी और नैतिकतावादी है। दरअसल वह इनमें से कोई नहीं थे। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत के हितों या इसकी संप्रभुता का बलिदान किये बगैर उन्होंने देश को शीतयुद्ध के बारूदी सुरंगों भरे क्षेत्र के बीच चलाने में भारी यथार्थवाद को प्रदर्शित किया था। लोग उन हालातों, घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों को भूल जाते हैं, जिनमें नेहरू ने भारत की विदेश नीति को स्वरूप दिया था।

सन् 1947 में जब स्वाधीनता प्राप्त हुई, भारत के पास नाममात्र की सैनिक और आर्थिक शक्ति थी। विभाजन सेना में भी हुआ था और इसका एक हिस्सा पाकिस्तान चला गया था। जहाँ तक अर्थव्यवस्था का संबंध है, इसके लिये आलोचनापूर्वक यह कहा जाता था कि भारत में तब एक पिन भी नहीं बनती थी। नेहरू का मानना था कि अपने मुट्ठी भर संसाधनों का इस्तेमाल प्राथमिकता के आधार पर आर्थिक विकास के लिये निवेश करने में करना चाहिये न की सैनिक तैयारियों के लिये करना चाहिये। जो सैनिक शक्ति मज़बूत आर्थिक नींव पर आधारित नहीं, वह स्थायी नहीं होगी, वह बालू पर बनाई गई नींव जितनी क्षणिक होगी। अनेक देशों के उदाहरण सामने थे, जैसे कि उस काल का पाकिस्तान और थाईलैंड, जिन्होंने मूलतया सैनिक शक्ति पर भरोसा किया था, जिसे उनकी अर्थव्यवस्था का समर्थन प्राप्त नहीं था। इन पर सदा अस्थिर शासकों का राज रहा और वे लगातार दूसरे देशों पर निर्भर रहे थे। नेहरू अत्यंत यथार्थवादी थे। वे जानते थे कि देश का स्थायित्व और

अध्याय
15

1947-64 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy During 1947–64)

आज़ादी के समय भारत की आर्थिक स्थिति दयनीय थी, उपनिवेशवाद ने अर्थव्यवस्था और समाज को बर्बाद कर दिया था तथा उसे शेष विश्व में हो रहे आधुनिक औद्योगिक परिवर्तनों से दूर रखा। घोर गरीबी, निरक्षरता, खेती और उद्योगों की बदहाली के अलावा उपनिवेशवाद द्वारा भारतीय अर्थतंत्र और समाज में लाई गई ढाँचागत विकृतियों ने आत्मनिर्भर विकास का काम अत्यंत कठिन बना दिया था। भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न हिस्सों के बीच प्रतिकूल संबंध और ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था पर उसकी अनिवार्य निर्भरता, भारतीय अर्थव्यवस्था की तत्कालीन ढाँचागत विकृति का ही उदाहरण है।

स्वतंत्र भारत के तीव्र औद्योगिक विकास के लिये इसी औपनिवेशिक विरासत को तोड़ना ज़रूरी था। प्रथम औद्योगिक क्रांति के दो सौ वर्षों के बाद और कई अन्य देशों में औद्योगिक क्रांति के सौ वर्षों के बाद भारत में आधुनिक औद्योगीकरण की स्थापना करना एक दुरूह कार्य था। उपनिवेशवाद द्वारा निर्मित इन समस्याओं के अलावा भारत के सामने पूरी तरह बदली हुई रणनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ थीं। यद्यपि उपनिवेशवाद से स्वतंत्र हुए कई अन्य देशों के मुकाबले भारत कई मामलों में अनुकूल स्थिति में था। 1914 और 1947 के बीच भारतीयों के स्वामित्व में और उनके द्वारा नियंत्रित एक छोटा किंतु स्वतंत्र औद्योगिक आधार देश में तैयार हो चुका था। दोनों विश्वयुद्धों एवं तीस के दशक की वैश्विक महामंदी के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद के कमजोर पड़े शिकंजे का फायदा उठाकर यह कार्य संभव हुआ। भारत की आज़ादी आते-आते भारतीय उद्यमी भारत में यूरोपीय उद्यम का सफलतापूर्वक मुकाबला कर पा रहे थे। इस प्रकार वे भारत के औद्योगिक उत्पादन के एक बड़े हिस्से पर अपना अधिकार कर सके। भारतीय पूंजीपतियों का वित्तीय क्षेत्र, जैसे– बैंकिंग, जीवन बीमा इत्यादि पर भी प्रभुत्व स्थापित हो गया था।

अत: आज़ादी के वक्त तक उपनिवेशवादी इतिहास के बावजूद भारत में एक ऐसा स्वतंत्र आर्थिक आधार तैयार हो गया था जिसके आधार पर आगे बढ़ा जा सकता था तथा स्वतंत्र और तेज औद्योगीकरण की नीति अपनाई जा सकती थी।

ब्रिटिश भारत में उद्योग-धंधों का जो सीमित विकास हुआ भी वह ब्रिटेन के सहयोग से नहीं वरन् ब्रिटिश बाधाओं के बावजूद हुआ था। स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक प्रभाव स्थान एवं समय के हिसाब से भिन्न था, अर्थात् पूरे भारतवर्ष में इनकी आर्थिक नीतियाँ सदैव बदलती रहीं तथा इन परिवर्तित आर्थिक नीतियों के कारण पड़ने वाले हानिकारक एवं लाभप्रद प्रभाव भी विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग रहे। ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण ही पश्चिमी भारत की तुलना में पूर्वी भारत को ज़्यादा नुकसान हुआ और इसके संयुक्त प्रभाव के रूप में स्वतंत्रता के समय गुजरात व महाराष्ट्र की आर्थिक स्थिति बिहार, बंगाल, उड़ीसा एवं पूर्वोत्तर के राज्यों से ज़्यादा बेहतर थी। पश्चिमी भारत में इस काल में कुछ उद्योगों की स्थापना भी इसका एक कारण था। 20वीं सदी के प्रारंभ से ही राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रतिरोध एवं तमाम अंतर्राष्ट्रीय कारकों के प्रभाव से ब्रिटिश साम्राज्यवाद कमजोर पड़ने लगा था। इस दौर में ब्रिटिश शासक राजनीति के साथ-साथ कुछ आर्थिक रियायतें जैसे-इस्पात, चीनी, वस्त्र, कागज, सीमेंट आदि उद्योगों को शुष्क संरक्षण देने के लिये मजबूर हुए। इससे भारतीय उद्योग, जो अब तक चाय, कॉफी, जूट, तंबाकू, रबर, अभ्रक, मैंगनीज जैसी निर्यात प्रधान वस्तुओं के उत्पादन तक ही सीमित था, का विस्तार संभव हुआ। फिर भी आधुनिक विनिर्माण उद्योग का जो विकास हुआ भी वह परंपरागत हस्तशिल्प उद्योगों के विनाश से होने वाले नुकसान के मुकाबले बहुत कम था। ब्रिटिश भारत में व्याप्त इन स्थितियों से उत्पन्न व्यापक दरिद्रता व लोगों में क्रय शक्ति की कमी ने भी एक ठोस घरेलू-बाज़ार के विकास को बाधित किया। हालाँकि ब्रिटिश भारत में विकसित उद्योगों एवं तत्पश्चात् राज्य की सकारात्मक भूमिका के कारण भारत अपने-आपको नव-उपनिवेशवाद के चंगुल से बचा पाया।

15.1 आर्थिक विकास के प्रारंभिक विचार (स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात्) *[Initial Thoughts of Economic Development (Pre and Post Independence)]*

महात्मा गांधी अक्सर कहते थे कि 'भारत की आत्मा उसके गाँवों में निवास करती है।' आज़ादी के समय भारत अधिकांशत: किसानों और मजदूरों का देश था। इसकी करीब तीन-चौथाई आबादी कृषि कार्य में लगी थी और देश का लगभग 60% सकल घरेलू उत्पाद भी इसी क्षेत्र से आता था। इसके साथ ही देश में एक छोटा-सा लेकिन विकासशील औद्योगिक क्षेत्र भी मौजूद

अध्याय
16

भारत : चीन व पाकिस्तान से युद्ध
(India : War with China and Pakistan)

वर्तमान समय में भारत विश्व के प्रभावशाली देशों में से एक है। दक्षिण एशिया में स्थित भारत की भौगोलिक अवस्थिति भी ऐसी है कि यह विश्व के सभी देशों के अलावा पड़ोसी देशों के लिये भी काफी महत्त्व रखता है। भारत के दो निकटतम एवं अहम पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान और चीन हैं। हालाँकि भारत का इन दोनों राष्ट्रों के साथ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध बेहतर हैं, परंतु सीमा विवाद जैसे मुद्दों के कारण टकराव की संभावना बनी रहती है।

16.1 भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि एवं घटनाक्रम *(Background and Events of India-China War)*

सही मायने में देखा जाए तो 1950 के पूर्व भारत और चीन के बीच राजनीतिक संबंध निम्नस्तरीय थे, लेकिन सांस्कृतिक स्तर पर दोनों देशों के बीच अत्यधिक घनिष्ठता थी। भारत से चीन तक बौद्ध धर्म के प्रचार ने सांस्कृतिक संबंधों की स्थापना की थी। प्राचीन सिल्क व्यापार के आधार पर दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंध भी स्थापित हुए थे। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के दौरान कई भारतीयों ने चीन की यात्रा की तथा कई चीनी छात्रों ने नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। दसवीं शताब्दी में बौद्ध धर्म के पतन के बाद भी दोनों देशों के संबंधों में घनिष्ठता बनी रही। भारत-चीन संबंधों को सबसे गहरा आघात तब लगा जब एशिया में साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का विस्तार हो गया।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद और सन् 1949 में चीन के जनवादी लोकतंत्र की स्थापना के बाद दोनों देशों ने विदेश नीति के बदले घरेलू विकास को प्राथमिकता दी। दोनों देशों ने परस्पर राजनयिक संबंधों की भी स्थापना की, लेकिन दोनों देशों के बीच वैचारिक मतभेद भी विद्यमान थे। जहाँ चीन सोवियत संघ के साथ मिलकर अमेरिका की साम्राज्यवादी नीतियों का विरोध कर रहा था वहीं भारत ने इन दोनों महाशक्तियों के साथ समान दूरी बनाकर गुटनिरपेक्षता की संकल्पना पर कार्य करना प्रारंभ किया। वैचारिक मतभेद के बावजूद दोनों देशों ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिये पंचशील समझौता किया। इस दौरान दोनों देशों के राजनीतिक संबंध में कुछ सुधार आया तथा इसी प्रकार के माहौल में 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा दिया गया, लेकिन 1954 में ही चीन ने अक्साई चिन को अपना भू-भाग बता दिया तथा वहाँ से एक सड़क का निर्माण करके मतभेदों को और गंभीर बना दिया। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया था कि तिब्बत के क्षेत्र अथवा संप्रभुता पर उसका कोई दावा नहीं था लेकिन उसके व्यापार को बाधित नहीं किया जाना चाहिये। मैकमोहन रेखा को भी चीन ने कभी भी अंतर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में मान्यता नहीं दी। सीमा-विवाद के कारण ही दिन-प्रतिदिन भारत-चीन के बीच 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का रिश्ता 'हिंदी-चीनी बाय-बाय' के रूप में बदलता चला गया। चीन ने भारतीय संप्रभुता वाले एक बड़े क्षेत्र पर अपना दावा करके इस समस्या को और गंभीर बना दिया।

आज़ादी के बाद भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बनाते हुए अपने पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखने की कोशिश की और चीन के संबंध में भी इस नीति का पालन किया। इधर सीमा विवाद को लेकर दोनों देशों के बीच पहले से ही गर्मी थी। इस बीच तिब्बत की समस्या भी बढ़ने लगी थी। तिब्बत पर चीन द्वारा अधिकार कर लेने के बाद चीनी सैनिकों व हान समुदाय के लोगों का भी हस्तक्षेप तिब्बत में बढ़ता ही जा रहा था। इन हस्तक्षेपों के विरोध में पूर्वी तिब्बत के संपाओं ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को चीन ने सफलतापूर्वक दबा दिया। अब तिब्बत के दैवीय शासक दलाई लामा पर भी चीन का दबाव बढ़ने लगा तथा दैवीय शासक इस समस्या का कोई समाधान न निकलता देख भारत में राजनीतिक शरण का अवसर तलाशने लगे। भारत सरकार द्वारा इसे स्वीकार कर लिये जाने के बाद दैवीय शासक अपने हज़ारों समर्थकों के साथ रात्रि प्रहर में चुपचाप भारत आ गए। भारत सरकार द्वारा दलाई लामा को राजनीतिक शरण प्रदान की गई थी, किंतु उन्हें भारत भूमि से किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियाँ करने तथा 'निर्वासित सरकार' बनाने की इजाज़त नहीं दी गई थी। नेहरू ने उन्हें बातचीत के द्वारा तिब्बत समस्या का समाधान निकालने की सलाह दी तथा इस कार्य

अध्याय
17

स्वतंत्र भारत में भूमि-सुधार
(Land Reforms in Independent India)

17.1 ब्रिटिश भारत में भूमि अधिकार प्रणाली *(Land Tenure System in British India)*

उपनिवेशवाद का भारतीय कृषि पर बड़ा ही घातक प्रभाव पड़ा। यह घटना उस समय की है, जब किसी भी अन्य प्राक्-औद्योगिक समाज के समान भारतीय कृषि भी देश के कुल उत्पादन में पूरी तरह प्रभुत्वकारी स्थिति में थी। उपनिवेशवाद ने बिना नई गतिशील शक्तियों को प्रवृत्त किये परंपरागत भारतीय-खेती के आधार को बर्बाद कर दिया। इस दौरान कृषि के वाणिज्यीकरण और किसानों के बीच विभेदीकरण की प्रक्रिया ज़ोरों से चल रही थी। भारतीय कृषि व समाज भी संक्रमणकालीन दौर से गुज़र रहा था, लेकिन भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह संक्रमणकालीन दौर भारतीय कृषि व समाज के उत्थान की ओर नहीं था।

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय कृषि में कुछ खास विशेषताएँ उभरीं। अंग्रेजों ने अपने हितों के अनुसार अलग-अलग समय में तथा अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न भू-राजस्व प्रणाली, जैसे- स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी तथा महालवाड़ी व्यवस्था को अपनाया। इसके अन्य परिणाम चाहे जो रहें हों, किंतु इसका एक निश्चित परिणाम था- भारतीय कृषकों का अत्यधिक शोषण।

ज़मींदारी व्यवस्था *(Zamindari system)*

ज़मींदारी व्यवस्था के अंतर्गत ज़मींदार एवं सरकार के बीच सीधा संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया था। इस व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(i) यह व्यवस्था मुख्यरूप से उत्तर भारत में प्रचलित थी। इसमें सीधे कृषकों से भू-राजस्व संबंधी समझौते नहीं करके प्रभावशाली किसानों से समझौते किये गए, जो स्वयं तो खेती नहीं करते थे, परंतु कृषकों से भू-राजस्व की वसूली कर उसका तयशुदा हिस्सा सरकार को देते थे। इन लोगों को ज़मींदार कहा गया।

(ii) इस व्यवस्था में ज़मींदारों को भूमि पर स्वामित्व दिया गया पर इसमें स्वामित्व का आधार समय पर भू-राजस्व की अदायगी करना था। समय पर राजस्व नहीं अदा करने से ऐसे ज़मींदार को बेदखल कर भू-स्वामित्व किसी और को दिया जा सकता था।

(iii) कृषकों को मात्र भू-किराएदार की स्थिति प्रदान की गई तथा भूमि पर उनके अधिकार को मान्यता नहीं दी गई। कृषकों के वन चारागाह आदि पर अधिकार एवं गाँव के तालाबों आदि में मत्स्य पालन के अधिकारों को भी समाप्त कर दिया गया।

(iv) ज़मींदार भू-राजस्व अदा करने में विफल रहने वाले कृषक को उसकी भूमि व संपत्ति से बेदखल भी कर सकता था। प्रायः भू-राजस्व वसूली का काम अधिकारियों व अधीनस्थों को ही सौंपा जाता था।

(v) ज़मींदारी व्यवस्था के एक अन्य प्रकार के रूप में जागीरदारी व्यवस्था का विकास हुआ, जिसमें शासक भूमि की ज़िम्मेदारी अपने अधीनस्थ सामंतों के ज़िम्मे छोड़ देते थे। इसको (सामंत) जागीरदार को लगान एवं नज़राना पेश करने के अतिरिक्त कुछ प्रशासनिक व सैन्य सेवाएँ भी उपलब्ध करानी होती थीं। ऐसी व्यवस्था राजस्थान, हैदराबाद आदि रियासतों में प्रचलित थी।

रैयतवाड़ी व्यवस्था *(Ryotwari system)*

(i) रैयतवाड़ी व्यवस्था में मध्यस्थों की भूमिका नहीं होती थी, क्योंकि कृषक अपनी भूमि का स्वयं मालिक होता था तथा वह सीधे सरकार से भू-राजस्व संबंधी करार करता था।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596